Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में संगीत तत्व

डॉ0 अनिल कुमार शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
चौ0 शिवनाथ सिंह शाण्डिल्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय, माछरा, मेरठ

शोध सारांश –''काव्य'' और ''संगीत'' दोनों ही गतिशील कलाएं हैं, दोनों ही कणेन्द्रिय के माध्यम से आनन्द का संचार करती हैं। संगीत जिन भावनाओं की सूक्ष्म और निराकार अभिव्यक्ति करता है उनहीं को कविता साकार रूप प्रदान करती हैं। ''कविता'' जब तक गाई नहीं जाती है वह पूर्णरूपेण आनन्द नहीं दे पाती। ''संगीत का उद्देश्य हमारी आत्मा को प्रभावित करना है। कवि दिनकर के काव्य में राष्ट्रवेदना, अभियान–गति जागरण गीत, प्रेरणा, गीत, क्रांति गीत, सांस्कृतिक गीत ही अधिक मिलते हैं। ''काव्य–कला'' की दृष्टि से भी ''कुरूक्षेत्र'' क उच्च कोटि की काव्य–कृति है। कवि ने नाद–सौन्दर्य उत्पन्न करने के लिए अपने काव्य में स्वर विधान की ओर पर्याप्त ध्यान दिया है। स्वरों के संयोजक से उन्होंने अपने काव्य को इतना सरस एवं मधुर बनाने का प्रयास किया है कि मानव का हृदय आनन्द विभोर होकर बार–बार सुनने का आकांक्षा प्रकट करता है। सांगीतिक दृष्टि से दिनकर जी की काव्य–रचना ''रसवंती'' का अपना एक विशिष्ट स्थान है। ''युग कवि दिनकर'' जी ने सर्वत्र अपने ढंग का नाद–सौन्दर्य और संगीत का ध्यान रखा है। दिनकर कवि को अनेक वाद्ययंत्रों का ज्ञान भी था। कवि दिनकर ने अपने काव्य में गायन, वादन तथा नृत्य इन तीनों कलाओं का समावेश किया है। राष्ट्रकवि दिनकर जी की कृतियों में लोकचेतना, लोकमानस, लोक संस्कृति, लोक रीति आदि अनेक सांस्कृतिक तथ्य भरे पड़े हैं। आपकी वाणी में अदभ्य ओज, पौरूष की ध्वनि है, नव जीवन का स्पन्दन है, विरोध का गर्जन और भावी युग का दर्शन है।

मुख्य शब्द– काव्य, संगीत, ध्वनि, कविता, लय, कला।

''काव्य'' और ''संगीत'' दोनों ही गतिशील कलाएं हैं, दोनों ही कणेन्द्रिय के माध्यम से आनन्द का संचार करती हैं। ''ध्वनि'' और ''लय'' का प्रयोग संगति और काव्य में मसन रूप से होता है। संगीत जिन भावनाओं की सूक्ष्म और निराकार अभिव्यक्ति करता है उनहीं को कविता साकार रूप प्रदान करती हैं।''कविता'' जब तक गाई नहीं जाती है वह पूर्णरूपेण आनन्द नहीं दे पाती और ''संगीत'' जब तक गीत–युक्त नहीं होता तब तक पूर्ण रूप से प्रभावशाली नहीं बनता, वैसे तो काव्य के सभी तत्वों मे संगीत तत्व विद्यमान रहता है किन्तु ''गीति–काव्य'' में काव्य और संगीत का समन्वय विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है। संगीत कला के इसी उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए डॉ0 श्यामसुन्दर दास जी ने लिखा है–

''संगीत का उद्देश्य हमारी आत्मा को प्रभावित करना है। इसमें यह कला इतनी सफल हुई है जितनी और कोई कला नहीं हो पायी हैं संगीत हमारे मन को अपनी इच्छानुसार चंचल कर सकता है, इस विचार से यह वास्तु, चित्रकला, मूर्तिकला से बढ़कर है।''

राष्ट्रकवि दिनकर ने अपने काव्य में ऐसा ही वर्णमय चित्र प्रस्तुत किया है। इनके साथ–साथ संगीतमय नादसोन्दर्य उत्पन्न करने के लिए ऐसे स्वरों तक का भी विधान भी किया गया है जिसमें भावपूर्ण संगीत गाने की क्षमता है तथा राग–चित्र के निर्माण में भी पूर्ण सहायक हैं नवीन छंद, नई ध्वान्यकत्मता नई उपमाएं, नई अर्थ–शक्ति आदि के समावेश से काव्य समृद्ध बन गया।

राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण अपनी रचनाओं में अपने विशाल देश के प्रति अनुराग का उच्च भाव राष्ट्र वंदना के रूप में मुखरित किया है जो कि निम्नांकित पंक्तियों में दृष्टव्य है–

मेरे नगपति मेरे विशाल
साकार, दिव्य, गौरव विराट
पौरूष के पूंजीभूत ज्वाल
मेरे जननी के हिम किरीट
मेरे भारत के दिव्य भाल।

उपर्युक्त कविता में ''राग शर्करा'' के स्वरों द्वारा लिपिबद्ध कर ली जाये तो इसमें भाव से लेकर शिल्प तक ओज और पराक्रम का समावेश के साथ कविता का भाव और भी प्रबल हो जायेगा।

वस्तुतः दिनकर ओज के कवि हैं। उनकी वाणी में जन–जन को प्रकाशित करके अपने संदेश को घर–घर पहुंचा देने की क्षमता हैं उनकी पुकार देश की पुकार होती है। उनका स्वर देश का स्वर होता है। उनकी अनेक देशभक्तिपूर्ण कविताओं को लोकप्रियता मिली है और इस लोकप्रियता का कारण आधारभूत रूप में यह है कि लोक गीतों की परम्परा से जुड़ी हुई हैं।

कवि दिनकर के काव्य में राष्ट्रवेदना, अभियान–गति जागरण गीत, प्रेरणा, गीत, क्रांति गीत, सांस्कृतिक गीत ही अधिक मिलते हैं। युग एवं परिवेश के अनुसार वे यथार्थ से क्षुब्ध होकर ऐसे गीतों का सृजन करते हैं। इतिहास में आँसू मगध गरिमा, सामधेनी, परशुराम की प्रतीक्षा, हुंकार आदि में उनके ओज–पूर्ण गीत ही मिलते हैं।

बुझी शौर्य की शिखा हाय
वह गौरव ज्योति मलीन हुई
कह दो उनसे जगा कि उनसे
वसुधा वीर महान हुई।

इस प्रकार ''हुँकार'' का कवि क्रान्तिकारी है परन्तु आतंकवाद की धरा में उसने अपने आपको बहाया नहीं बल्कि सदैव राष्ट्रीयता का गान किया है। राग पूरिया धनाश्री के स्वरों में बद्ध यह कविता और भी प्रभावी बन जायेगी जैसे–

न लूंगा आज रक्त का शंख,
न गाऊँगा पौरूष राग।
स्वाभिमानी! जलने दो उर बीच, एक पल तो एक मीठी आग।

अतः युगकवि दिनकर के प्रगतिवादी स्वर राष्ट्रप्रेम और मानवतावाद रूप को अत्यधिक संबल प्रदान करते हैं और इसलिए उनकी कविताओं का ''स्वर'' राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत रहा हैं

''काव्य–कला'' की दृष्टि से भी ''कुरूक्षेत्र'' क उच्च कोटि की काव्य–कृति है। प्रस्तुत कृति में कवि ने प्राचीन एवं नवीन छंद विधान द्वारा एक अद्‌भुत संगीतात्मक लय एवं ध्वनि प्रवाह की दृष्टि से है। इस सम्बन्ध में डॉ0 पुत्तुलाल शुक्ल ने लिखा है–

''छन्द का नियत एवं मधुर आवर्तन मानव धरातल पर गीत की धारा बहाता है जिसमें वर्ण, शब्द का वाक्यांश और वाक्य वेग से प्रवाहित होकर मूर्त होते हैं।''

अतः संगीत का छंदयोजना एवं अलंकार योजना में विशिष्ट सम्बन्ध है।

स्वयं दिनकर एक उच्चकोटि के गायक रहे। शैशव से ही आप सस्वर रामायण का पाठ करते थे तथा नाटक के गीतों की तर्ज पर स्वयं गीत भी लिखा करते थे।

चूंकि प्रारम्भ से ही दिनकर के स्वर में माधुर्य और ओज था इसलिए आप राष्ट्रीय पाठशाला के विद्यार्थी के रूप में सार्वजनिक सभाओं में वन्देमातरम गाने के लिए जाते थे।

कवि ने नाद–सौन्दर्य उत्पन्न करने के लिए अपने काव्य में स्वर विधान की ओर पर्याप्त ध्यान दिया है। स्वरों के संयोजक से उन्होंने अपने काव्य को इतना सरस एवं मधुर बनाने का प्रयास किया है कि मानव का हृदय आनन्द विभोर होकर बार–बार सुनने का आकांक्षा प्रकट करता है और इस सरसता मधुरता का कारण है उनके गीतों में स्वर–मैत्री एवं वर्णों की समुचित योजना का समावेश। जैसे–

गीत अगीत कौन सुन्दर है
गाकर गीत विरह के तरिनी
बेगवती बहती जाती है,
दिन हल्का कर लेने को–
देते स्वर यदि तुम मुझे विधाता
अपने पतझर के सपनों का
मैं भी जग को गीत सुनाता।

उपर्युक्त पंक्तियों में कोमल स्वरों के संयोजन से भैरवी रागिनी में यह कविता और अधिक मुखरित हो जाती है।

इस प्रकार दिनकर जी ने स्वरों के आरोहावरोह तथा उनके हस्व दीर्घ प्लुत एवं कोमल तीव्र स्वरूपों की भावानुकूलता का प्रयोग करके अपनी स्वर विधान सम्बन्धी निपुणता तथा उनकी अंतरात्मका के ज्ञान का यथेष्ट परिचय दिया है।

कवित दिनकर सर्वदा अपनी मिट्टी के गीत गाना पसन्द करते हैं और इस धरती की धूल का गान गा सकने की क्षमता अपने अन्दर उत्पन्न करना चाहते हें। वह प्राकृतिक सौन्दर्य का सच्चा चितेरा भी है तथा प्रकृति सुन्दरी का गान गाने लगता है। जैसे–

चन्द्रिका किस सुन्दरी की है हँसी
इब यह किसी अनन्त कुकूल है
किस परी के प्रेम की मधु–कल्पना
व्योम में नक्षत्र वन में फूल है।

यही नहीं, कवि की वाणी में तीनों कालों की स्वर भी ध्वनित होते हैं, ऐसे दिव्य मादक प्रकृति के रूप का ज्ञान रेणुका में किया है।

गत विभूति भावी की आशा से,
युग धर्म पुकार उठे।
सिंहों की यम अन्ध गुहा में,
जागृति के हुंकार उठे।

सांगीतिक दृष्टि से दिनकर जी की काव्य–रचना ''रसवंती'' का अपना एक विशिष्ट स्थान है। इसकी शब्दावली इतनी मधुर है कि मानो रस छलका पड़ता है। बिल्कुल एक चित्र सा खड़ा कर दिया है इनमें अधिकांश गीत ऐसे हैं जिनमें राग–रागिनीओं की आदर्श संयोजना की है–

हमारे भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग–रागनियों का सम्बन्ध देवी–देवताओं से सम्बद्ध किया गया है और प्रत्येक का काव्यमय भाषा में ध्यान और भावात्मक चित्र चित्रित किया गया है। ये देवी देवता एक आलौकिक जगत में निवास करते हैं जिनका आवाहन राग के शुद्ध ध्यान द्वारा करने से वे अवतीर्ण होते हैं

और उनकी सिद्धि प्राप्त होती है। कवि दिनकर की निम्न कविता में राग–मल्हार जंग से किसी भी रागों के स्वरों का समावेश कर लिया जाए तो सहज ही प्रभावी बन जायेगा। जैसे–

नीलम धन गरज–गरज बरसे
रिममि रिमझिम रिमझिम
लहरें गाती हैं मधु–विहाग
हे हे सखि। हमर दुखक न ओर।

इसी प्रकार राग के रूप के अनुसार ही छंदों की लय और गीत परिवर्तित करने की आलौकिक क्षमता ''कवि दिनकर'' की इन पंक्तियों में दृष्टिगत है–

निज सागर को थाह रहा हूँ
उन्मन सा कुछ बोल रहा हूँ
मन का अलस खेल यह गुन–2
सचमुच गीत बना रहा न में।

अपनी कविता में ''दिनकर'' ने ''नाद सौन्दर्य'' के निमिक्त प्रयुक्त अनुप्रासों का प्रयोग इतने सहज रूप से किया है कि कुछ स्थल तो अत्याधिक श्रुति मधुर तथा संगीतमय हो गये हैं, जैसे–

सुन उद्‌बोधन नाद नींद से,
जगत उठते नर–नारी।

इस प्रकार ''युग कवि दिनकर'' जी ने सर्वत्र अपने ढंग का नाद–सौन्दर्य और संगीत का ध्यान रखा है क्योंकि वे जानते थे कि भाव जगत में जो कार्य कल्पना करती है वही कार्य शब्द जगत में ''राग'' उत्पन्न करता है।

संगीत के बिना भाषा में शक्ति, स्फूर्ति और आकर्षक गतियां उत्पन्न नहीं हो सकती। ''कुरूक्षेत्र'' तथा ''रश्मिरथी'' में यह प्रयोग ओज के लव–निर्माण के लिए किया गया है। एक आरोहमूलक ध्वनि सी चलती है। अर्थात् एक बार प्रारम्भ किए गये गायन के स्वर आरोह (ऊपर चढ़ते हुए) के क्रम में बने रहते हैं जैसे इन पंक्तियों में दृष्टव्य है–

जब फूट पड़ रण में यह आग तो
कौन सा पाप नहीं किया तूने।

इस तरह यदि देखा जाए तो दिनकर जी की परम्परागत तथा नवीन दोनों ही प्रकार की छंद योजना का सबसे विशिष्ट गुण है उनकी लयात्मकता तथा भावानुरूपता। इन पंक्तियों में यह दोनों ही भाव मुखरित हुए हैं–

गूंज रहे तेरे इस तट पर
गंगे, गौतम के उपदेश
ध्वनित हो रहे इन नहरों में
देखी अहिंसा के संदेश।

इनकी कृति में यदि एक ओर अतीत के लिए रोदन तथा क्रान्ति की बातें हैं तो दूसरी ओर प्रणय के मादक मधुर गीतों को गुनगुनाया है। राग मालकोश में उपरोक्त कविता के गायन से कविता और भी सुमधुर हो जाती है। वस्तुतः कवि दिनकर ने कला का प्रयोग जीवन के लिए किया हैं कला जीवन के प्रति आस्था को संबल बनाती है ललित कलाओं के अन्तर्गत दिनकर जी ने अपने काव्य में सभी कलाओं का समावेश किचा है चूंकि संगीत का आधार ''नाद'' है जिसे मनुष्य या तो अपने कंठ से अथवा ''वाद्ययंत्रों'' से उत्पन्न करता है।

दिनकर कवि को अनेक वाद्ययंत्रों का ज्ञान भी था तभी उन्होंने अपने काव्य के विभिन्न स्थलों पर बांसुरी, बीन, मृदंग, वेणु, मुरली, धोंसा, विपंची आदि वाद्ययंत्रों का प्रयोग भी किया है। बांसुरी के संयोग से ''गीत'' का गायन अत्यधिक कर्णप्रिय हो जाता है। अतः बांसुरी बजाकर समाज के दर्शकों सर्पों को सावधान करते हुए कवि यह स्वर ''व्याज–विजय'' शीर्षक कविता में कितना सबल हो गया है–

आया हूँ बाँसुरी बीच उद्धार लिए जनगण का
पग–पग पर तेरे खड़ा हूँ और लिए त्रिभुवन का

× × × × ×

अभी तक कर न पाया न सिंगार
रास की मुरली उठी पुकार।

इस प्रकार दिनकर जी की अन्य रचनाओं में इस कला के अन्तर्गत अनेक रागों, छंदों, गीतों, लोक गीतों, वाद्ययंत्रों तथा नृत्य आदि से सम्बन्धित विविध शब्दों का उल्लेख भी मिलता है। जैसे स्वर, शंश, गीत विजय–नाद, राग धीरे–धीरे गा, रागिनी, वीणा का तार, लय, गुन्जित, अलन्त, राग मर्सिया तराना प्रभाती राग, तान दीपक राग आदि।

निम्न पंक्तियों में संगीतिक शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है–

लाता वे स्वर जो कि शब्द गुण
अम्बर के उर में है संचित।

× × × ×

होश में आता हुआ सा गान
दर्द में भीगी हुई सी तान।

''कवि दिनकर'' ने विभिन्न शब्दों के एकत्र संयोग से पदों की रचना की है और इनके इस प्रयोग से एक ध्वनि एक मीड सी उत्पन्न हो गई हैं ''मीड'' यानि सांगीतिक भाषा में एक स्वर से दूसरे स्वर पर आवाज को बिना तोड़े गाना। इसके प्रयोग से काव्य में सांगीतिक सुन्दरता बढ़ जाती है। जैसे–

ले अंड़ाई उठ, हिल धरा कर,
निज विराट स्वर में निनाद।
तू शैलराद् हुंकार, भरे फट जाय
कहा, भागे प्रमाद।

कवि ने ''दिल्ली'' की प्रकृति देश की दुःखद स्थिति का निरूपण मासिया तराया के रूप में किया है। ''तराना'' मुगलकालीन सभ्यता से प्रभावित होकर भारतीय श0गायन की वह विद्या है जिसमें नृत्य के बोल, पखावज के बोल होते हैं। यह विद्या गायकी व नृत्य का संयुक्त मंचन है इस शब्द का प्रयोग कवि दिनकर ने अपनी कविता में किया है।

डाल–डाल पर छेड़ रही कोयल मसिया तराना।

इस प्रकार ''रसवंती'', ''उर्वशी'' एवं ''रेणुका'' में श्रृंगार परक गीत ही मिलते हैं। सांगीतिक–दृष्टि से इसकी शब्दावली इतनी मधुर है कि स्वरों के मधुर संयोग से व्यंजक भी मधुमय संगीत लहरी प्रकट होते हुए दिखाई देते हैं। गायन वादन के अतिरिक्त नृत्य का उल्लेख भी अपनी एक विशेषता हैं सांगीतिक और सांस्कृतिक मूल स्त्रोत के देवता भगवान शिव और पार्वती संगीत कला नृत्यकला, नाट्यकला, चित्रकला और मूर्तिकला के रूप में नाट्येश्वर के रूप में व्यापक रूप से जनमानस में छाये हुए हैं। अतः कवि दिनकर ने अपनी काव्य कला में अर्धनारीश्वर का रूप प्रस्तुत किया है।

एक हाथ में डमरू, एक में वीणा, मधुर उदार

एक नयन में गरल, एक में संजीवन की धारा
जटा जूट में लहर पुण्य की शीतलता सुखकार
बाल चन्द्र दीपित त्रिपुण्ड पढ बलिहारी। बलिहारी।

इस प्रकार नृस्च भी दो प्रकार का तांडव एवं लास्य

नृत्य उत्कर हो तो तांडर यानि शिव
और मधुर और सुकुमार हो तो लास्य यानि पार्वति

''तांड़व पुरूषत्व'' तथा ''तास्य नारीत्व'' का प्रतीक है। कवि पहले ध्वंस का गायक बनकर हमारे बीच आता है और फिर नटवर शंकर से प्रलय वाहय ताण्डव नृत्य की प्रार्थना करता है। जैसे–

नाचो अनिलखंड भर स्वर में
फूंक फूंक ज्वाला अम्बर में।

इस प्रकार कवि दिनकर ने अपने काव्य में गायन, वादन तथा नृत्य इन तीनों कलाओं का समावेश किया है।

ऐतिहासिक कवि एवं राष्ट्रीय गायक होने के कारण कवि ने विभिन्न पर्वों पर गाये जाने वाले गीतों का वर्णन किया है। वसन्त उत्सव पर केवल स्त्री–पुरूष मात्र ही सुन्दर–सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित होकर विविध गीता एवं लोक नृत्यों का आयोजन नहीं करती वरन् प्रकृति भी श्रृंगारित हो सिहरती है।

प्राणों का उन्माद वर्ष का
गीतों में मधुकण भर दे।
जड़ चेतन विध रहे, हृदय पर
हम भी केशर के शर लें।

प्रस्तुत छंद में कविवर ने वसन्त को विद्रोही पर्व के रूप में प्रस्तुत किया है किन्तु विद्रोह का रूप सृजनात्मक है। अतः कवि ने वसन्त में रागात्मक रूप का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। वसन्तु ऋतु के आगमन पर सभी में नवचेतना का संचार हो जाता है तथा राग वसन्त का गायन भी उसी समय किया जाता है जिसमें दोनों मध्यमों का प्रयोग (शुद्ध एवं तीव्र) से व कोमल व शुद्ध स्वरों के लगाव से कविता का भाव चित्रित सा हो जाता है। शरद पूर्णिमा के दिन शरदोत्सव मनाया जाता है, जन जीवन में यह दिवस भी अत्यंत उल्लास, मधुरिमा एवं शुद्धता प्रदान करने वाला होता है। जैसे–

गंगा पूजन का साज सजा
कल कंठ–कंठ से तार बजा
स्वर्गिक उल्लास, उमंग वहां
पढ़ में सुर धनु के रंग यहां।

प्रस्तुत पंक्तियों में कविवर ने मिथिला में शरद के आकर्षण रूप में सांस्कृतिक चित्रण प्रस्तुत किया है, जिसमें गंगा पूजन के लिए जाती हुई अलंकृत नारियों के मधुर गीतों की झनकार वस्त्रों की रंग–बिरंगी छटा सद्भावना पूर्ण शब्दां का समन्वय भी है।

पावस ऋतु में किसान धु अनादी होकर अपने खेतों में पहुंचकर विभिन्न प्रकार के उत्सवों का आयोजन करते हैं तथा लोकगीत का गान करते हैं।

कवि आसाढ़ की इस रिमझिम में धन खेत में जाने दो।
कृषक सुन्दरी के स्वर में अटपटे गीत कुछ गाने दो

'ऐतिहासिक कवि एवं राष्ट्रीय गायक' होने के कारण कवि ने विभिन्न पर्व में गाये जाने वाले कविताओं में लोकगीत की प्राचीन परम्परा का निर्वाह किया है। दिनकर के अनुसार कवि हृदय में प्रेरणा के उद्गम का

कोई अन्य लोक भी होता है। यह कविता शक्ति को ईश्वर का वरदान समझता है। अतः प्रत्येक क्षण में वह ईश्वर से मधुर स्वर की याचना प्रेरणादायक गायन युग–युग के गायन तथा रसमय स्वर की याचना करता हैं

ऐसा दो वरदान कला को
कुछ भी रहे अजेय नहीं
रजकज से ले पारिजात तक
कोई रूप अजेय नहीं।

छायावती पंक्तियों की भांति दिनकर की कुछ कविताओं में निराशा, विवाद और भाग्यवाद काही स्वर मुखरित होता है। जीवन संगीत में इनका निराशावादी स्वर ही सुनाई पड़ता हैं रेणुका की परदेशी नामक कविता में यह स्पष्ट परिलक्षित होता है–

मैं न रूकूंगा इस भूतल पर
जीवन यौवन प्रेम गवांकर
वायु, उड़ाकर ले चल मुझको
जहां कहीं इस जग से बहार।

प्रस्तुत पंक्तियों में राग विभास या पूरिया के स्वरों द्वारा इसको गाया जाए तो यह कविता ताल व स्वर संयोजन से अलग ही रूप का सृजन करती है। इस प्रकार देखा जाए तो दिनकर का काव्य मधु–कुंजों में सांय–सांय कर बहने वाला संगीत नहीं है बल्कि काव्य आंधी और तूफान है।

अतः राष्ट्रकवि दिनकर जी की कृतियों में लोकचेतना, लोकमानस, लोक संस्कृति, लोक रीति आदि अनेक सांस्कृतिक तथ्य भरे पड़े हैं। आपकी वाणी में अदभ्य ओज, पौरूष की ध्वनि है, नव जीवन का स्पन्दन है, विरोध का गर्जन और भावी युग का दर्शन है।

सन्दर्भ सूची

1.दिनकर की काव्य भाषा – डॉ0 प्रतिभा जैन
2.इतिहास के आँसू, रामधारी सिंह दिनकर
3.सामंधनी, रामधारी सिंह दिनकर
4.रसवंती, रामधारी सिंह दिनकर
5.रेषुका, रामधारी सिंह दिनकर
6.कुरूक्षेत्र, रामधारी सिंह दिनकर
7.व्याल विजय, रामधारी सिंह दिनकर
8.दिल्ली, रामधारी सिंह दिनकर
9.ताण्डव, रामधारी सिंह दिनकर